चौधरी चरण सिंह – एक भारतीय राजनैतिक शख्सियत*

पॉल आर. ब्रास

I

1979 में जनता सरकार के पतन के बाद बहुत कम समय के लिए देश के प्रधानमंत्री रहे चौधरी चरण सिंह इससे पूर्व उत्तर प्रदेश राज्य में बिताये अपने लम्बे राजनैतिक काल में दो बार इस राज्य के मुख्यमंत्री रहे। इस दौरान उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियों में कृषि–आर्थिकी में अभूतपूर्व बदलाव लाने से लेकर अपने गृहराज्य की राजनीति को प्रभावित करने के साथ–साथ जीवन के आखिरी दो दशकों में पूरे देश को प्रभावित करने में अहम भूमिका अदा की।

उनके राजनीतिक जीवन के चार पहलू और उत्तरी भारत की समकालीन राजनीति पर उनका प्रभाव मुझे विशेष रूप से आकर्षित करता है। पहला तो यह कि अपने राजनीतिक कार्यक्षेत्र में वे भारतीय राजनीतिक व्यवस्था से उसके सभी स्तरों पर पूरे तौर पर जुड़े हुए थे। दूसरा यह कि उनकी पहचान भारत के मध्यवर्गीय कृषक समाज के अग्रणी प्रवक्ता के रूप में समीचीन थी। तीसरा यह है कि उनकी राजनीति उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच स्थित सामाजिक व्यवस्था के अधीन तथाकथित पिछड़ी जातियों की आकांक्षाओं के प्रति पूर्ण मुखर रही और चौथा पहलू यह कि उन्होंने कई किताबें और लघु पुस्तिकाएं लिखीं, जिनमें उन्होंने भारत के विकास के लिए ऐसी परिष्कृत, वैकल्पिक एवं सुसंगत नीतियों का खाका खींचा है जो पूर्व प्रधानमंत्रियों– नेहरू और इंदिरा गांधी की वैचारिकता से पूरी तरह भिन्न थी।

चरण सिंह देश के उन अंतिम महत्वपूर्ण नेताओं में से एक थे जिनका सक्रिय राजनैतिक सफर स्वातंत्र्यपूर्व कांग्रेसी आन्दोलनों से लेकर स्वतंत्रता के बाद की दलीय राजनीति से होते हुए राजीव गांधी के प्रधानमंत्री काल तक का रहा है। वे राजनेताओं की ऐसी पीढ़ी से हैं, जिनके अनुभव का विस्तार जिला, राज्य और राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य तक पहुंचा। अपने जीवन के अंतिम दो दशकों में वे कांग्रेस छोड़कर विपक्ष में आये और वहां जनता पार्टी के रूप में पहली गठबंधन पार्टी के गठन में प्रमुख सहयोग दिया, जिसके कारण जनता पार्टी कांग्रेस को पराजित कर केन्द्र में सरकार बनाने में सफल हुई। आज भी इनका

---

*(प्रस्तुत लेख "Economic and Political Weekly" के 25 सितम्बर, 1993 के अंक में "Chaudhuri Charan Singh : An Indian Political Life" शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इसके लेखक अमेरिकी प्रो0 पॉल आर. ब्रास हैं। लेख का हिन्दी अनुवाद **श्री अनुकाम त्रिपाठी** ने किया है।

प्रभाव पूरी तरह कायम है, जब उत्तर भारतीय राजनीतिक–पटल पर इनके द्वारा अपने अंतिम समय तक नियंत्रित राजनैतिक आधार को पाने के लिए अनेक विपक्षी नेतागणों में आपका गौरव गान करने की होड़ लगी रहती है। चरण सिंह एक ऐसे राजनीतिज्ञ थे जिनकी जड़ें ग्रामीण कृषि क्षेत्रों मे गहरी धंसी हुई थीं, जिनका उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के कुछ क्षेत्रों की कृषि पर आश्रित प्रमुख जातियों एवं उनकी अपनी जाट जाति पर पूरा असर था। जाट जाति उनका अहम आधार थी। 1052 से 1967 के बीच कांग्रेस की सूबाई राजनीति के प्रमुख तीन स्तम्भों में से एक थे। 1948 से 1965 के मध्य उत्तर प्रदेश कांग्रेस एवं सरकार के अन्दर घटित सभी दलगत विरोधों और मंत्रिमंडलीय संकटों में वह अगुआ रहे। हालांकि कांग्रेस की दलीय व्यवस्था में दूसरे दलीय नेताओं की तरह वह भी अपने विरोधियों को कमजोर करने, समर्थकों को पुरस्कृत करने, शत्रुओं को परास्त करने और खुद के लिए एवं अपने साथियों के लिए सत्ता–शक्ति बटोरने में लगे रहे तथापि अपनी योग्य सुसंगत नीतियों, सिद्धांतवादिता एवं स्पष्टवादिता के चलते वह दूसरों से नितांत अलग सुस्पष्ट नजर आते हैं।

उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश के प्रमुख दलीय राजनेता एवं 1952 से 1967 तक के दौर में मुख्यमंत्री रहे सी0बी0 गुप्ता से मतभेदों के दौरान, मंत्रिपरिषद की सामूहिक जिम्मेदारी को परिभाषित करने के सम्बंध में दोनों (गुप्ता एवं चरण सिंह) के बीच जिन टिप्पणियों का आदान–प्रदान हुआ, वह देखने योग्य था। इस संघर्ष में चरण सिंह ने राज्य के किसान वर्ग पर डाली गई कर–वृद्धि की मार का विरोध करते हुए एक विस्तृत मेमोरण्डम तैयार किया, जिसमें उन्होंने किसान वर्ग के समर्थन में एवं उद्योग क्षेत्र में बड़े पैमाने पर पूंजी निवेश का विरोध करते हुए अपनी सुसंगत नीतियों को बड़े ही तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया। अपने बचाव में सी0बी0 गुप्ता विकास की उन्हीं नीतियों के साथ खड़े नजर आये, जिन्हें कांग्रेस के दिल्ली नेतृत्व ने चुना था।[1] स्वतंत्रता के बाद के दो दशकों में अपने तमाम संघर्षों के दौरान चरण सिंह स्वयं को किसानों के प्रवक्ता के रूप में और उद्योग पर कृषि को वरीयता देने के पक्षधर के रूप में स्थापित करने में सफल रहे। उन्होंने एक ऐसी व्यवस्था पर बल दिया जिसमें जमींदारी के उन्मूलन के जरिये किसानों की भागीदारी सुनिश्चित हो और सभी किसानों के पास आर्थिक रूप से जीवन निर्वाह योग्य पर्याप्त जमीन हो।

चरण सिंह ने इन वर्षों में राज्य की नीतियों एवं प्रशासन के अधिकांश मुद्‌दों पर अपने विचारों को बड़ी ही स्पष्टता और सुदृढ़ता से रखा। लगातार बढ़ते भ्रष्टाचार के विरोध में, विशेष रूप से सर्वाधिक विकास को समर्पित कुछ सरकारी विभागों में पनपते भ्रष्टाचार एवं विकासार्थ उपलब्ध फण्ड राशि के सापेक्ष कर्मचारियों की बढ़ती तादाद के मद्‌देनजर, उन पर होने वाले सरकारी व्यय पर नियंत्रण के लिए चरण

सिंह आगे आये और उन्होंने भ्रष्ट अधिकारियों पर कठोर कार्यवाही करने और वेतन–महंगाई भत्ते में बढ़ोत्तरी हेतु संघर्षरत सरकारी कर्मचारियों पर नकेल कसने पर बल दिया।

वस्तुतः चरण सिंह कानून और व्यवस्था का कठोरता से अनुपालन कराने के साथ–साथ मजदूर संघों के आन्दोलनों, हड़तालों एवं राजनैतिक विरोध पर अंकुश लगाने पर जोर देते थे। 1957–58 में जब चरण सिंह राजस्व मंत्री थे, उन्होंने खाद्यान्न की कमी झेल रहे पूर्वी जिलों में राज्य सरकार के खिलाफ जनमत तैयार कराने को उत्सुक विपक्ष के राजनेताओं को करारा जवाब दिया। इस संकटकाल में चरण सिंह ने खाद्य वस्तुओं की कमी के वास्तविक कारणों का सटीक अनुमान लगाने के साथ ही संकट से निबटने के लिए पर्याप्त साधनों की पहचान पहले ही कर ली थी। इस तरह विरोधियों के सभी दावे गलत सिद्ध करते हुए उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि अकालग्रस्त इलाकों से राजस्व उगाहने की पर्याप्त संभावनाएं हैं। इस तरह उन्होंने जनता में विरोधियों द्वारा फैलये जा रहे दुष्प्रचार के खात्मे के साथ–साथ जनता में जगाई जा रही निरर्थक आशाओं पर भी विराम लगा दिया।[2] वह इस समय पुलिस प्रशासन के प्रति भी पूर्ण सतर्क रहे। अपने आलेख में विरोधियों द्वारा पुलिस प्रशासन में किये जाने वाले हस्तक्षेप के सम्बंध में चरण सिंह के विचार पूरी तरह तर्कसंगत एवं सुस्पष्ट थे कि पुलिस प्रशासन में हस्तक्षेप उसकी ईमानदारी पर आघात करने जैसा होगा।

1 अप्रैल 1967 के दिन चरण सिंह कांग्रेस छोड़कर विपक्ष में आ गये और उत्तर प्रदेश जैसे संवेदनशील राज्य के पहले गैर–कांग्रेसी मुख्यमंत्री बने। वह 1967–71 के दौर की राजनीति के प्रमुख नेताओं में से एक थे। जब गैर–कांग्रेसी सरकारें सत्ता में थीं तब दल–बदल के जरिये सबके अगुआ बने रहने का श्रेय चरण सिंह को ही था। उस समय उन्होंने एक नये राजनैतिक आन्दोलन का आगाज करते हुए एक नई और कृषि क्षेत्र पर अधिकारित पार्टी बी0के0डी0 का गठन किया, जिसका जनाधार मूलतः मध्यम वर्ग एवं मझौली किसान जातियों से रहा। इस आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य राज्य और देश की आर्थिक नीतियों को नये सिरे से परिभाषित करना था जिसमें बड़े–बड़े बांधों के निर्माण, वृहत् औद्योगीकरण और शहरी उपभोक्ताओं के लिए उद्योगों की स्थापना से हटकर ऐसी नीतियों पर जोर दिया गया, जिनसे ग्रामीण क्षेत्रों के काश्तकारों के हित में निवेश में बढ़ोत्तरी हो और इन क्षत्रों में भूमिहीनों को रोजगार देने के लिए लघु उद्योगों की स्थापना हो।

चरण सिंह लोक व्यवहार पर किये जाने वाले आघातों से कितनी सख्ती से निपटते थे, यह उनके उत्तर प्रदेश राज्य में दो बार के मुख्यमंत्रित्व काल से स्पष्ट है। दूसरे काल में, जो मात्र सात माह का रहा था, मैंने उनसे पूछा कि इस छोटे से मुख्यमंत्रित्व काल में वह मुख्य उपलब्धियां किन्हें मानते हैं तो उन्होंने

लोक व्यवस्था को बिखरने से बचाने के लिए और विरोधी दलों की राजनैतिक गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए अपनाये गये तौर–तरीकों को गिनाने के अलावा कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चलाये गये भूमि–कब्जाओ आन्दोलन से दृढ़ता से निपटने, विश्वविद्यालयों/कालेजों में छात्र संघों की अनिवार्य सदस्यता से छात्रों को रोकने, उनके समय में पूर्व की भांति हड़तालों का न होना एवं एक प्रमुख हड़ताल को तोड़ने में सफल रहने को अपनी प्रमुख उपलब्धियां बताया।[3] ये सभी उपाय सरकारी वित्तीय साधनों के प्रति संवेदनशील होने के चरण सिंह के गुणों की भलीभांति नुमाइंदगी करते हैं और ऐसा वह इसलिए करते थे, ताकि मिलने वाले लाभ कहीं साधनों की कमी के चलते भ्रष्टाचार के जरिये बहकर व्यर्थ न हो जाएं। वह शहरी कर्मचारियों की मांगों के भी घोर विरोधी थे, क्योंकि उनकी नजर में वे संख्या में बहुल ग्रामीण जन की अपेक्षा अधिक अधिकार सम्पन्न थे। परन्तु इसमें शक नहीं कि चौधरी साहब अपने राजनैतिक गुरु सरदार पटेल की तरह देश में शांति बनाये रखने के कार्य को सर्वाधिक महत्व देने के पक्षधर रहे।

उत्तर प्रदेश में चरण सिंह द्वारा एक गैर–कांग्रेसी सरकार[4] के रूप में सत्तारूढ़ होना भले ही अल्पकाल के लिए रहा, बी0के0डी0 को गठित करने के उनके कार्य ने उन्हें श्रीमती गांधी के समक्ष सीधी लड़ाई में उतार दिया, जबकि यह वह समय था जब श्रीमती गांधी अपने नेतृत्व को न केवल मजबूत कर रही थीं बल्कि कांग्रेस पार्टी की सत्ता–शक्ति को भी देश में सुदृढ़ता प्रदान कर रही थीं। श्रीमती गांधी द्वारा कांग्रेस में बी0के0डी0 के संविलयन को लेकर सहमति बनाने के अनेक प्रयासों को चरण सिंह ने लगातार नकारा।[5] यहां तक कि राजवंशियों के 'प्रिवी पर्स' के लिए लाये गये संविधान संशोधन की सफलता के लिए आवश्यक, राज्यसभा में मौजूद अपने तीन वोटों के लिए भी उन्होंने श्रीमती गांधी को मना कर दिया, जिसे अपने नीतिगत उद्देश्यों की पूर्ति में बाधक मानते हुए देश के राजनैतिक नेतृत्व की उनकी महत्वाकांक्षा को आघात पहुंचाने जैसा समझ कर श्रीमती गांधी ने तत्कालीन कांग्रेस–बी0के0डी0 की संविद सरकार से कांग्रेस का समर्थन वापस ले लिया और 1971 में संसदीय चुनाव घोषित कर दिये, जिसके बाद कांग्रेस ने दोनों सदनों में दो–तिहाई बहुमत हासिल कर लिया।

1970 के मध्यकाल से अपने देहावसान के वर्ष 1987 तक के अंतराल में चरण सिंह की राजनैतिक गतिविधियों का कार्यक्षेत्र अब 'केन्द्र' की राजनीति में स्थानांतरित हो गया था। इसमें आपातकाल का समय, जनता पार्टी का गठन, जनता पार्टी का सत्तारूढ़ होना और जुलाई 1979 में इसका भंग हो जाना शामिल है। इन सभी घटनाओं में चरण सिंह की केन्द्रीय भूमिका रही। उनके राजनैतिक संगठन और उत्तरी भारत में उनके समर्थन के आधार ने जनता पार्टी के संगठन को मजबूती प्रदान की, जिससे आपातकाल के बाद 1977 में घोषित आम चुनाव में जनता पार्टी ने श्रीमती गांधी को भारी शिकस्त दी। ऐसी परिस्थिति में देश

का प्रधानमंत्री चुने जाने में असफल रहने पर क्षुब्ध होकर उन्होंने और उनके समर्थकों ने मोरारजी देसाई की सरकार के अन्दर और सरकार के बाहर एक अलग गुट बना लिया और अंततः 1979 में जनता पार्टी की इस सरकार को गिरा दिया। इसी कृत्य के कारण ही चरण सिंह पर देशहित के खिलाफ सत्ता–लोलुप और अवसरवादी होने का अरोप लगता रहा है।

यद्यपि, उस समय भी, चरण सिंह का व्यवहार एक अवसरवादी राजनेता होने से काफी अलग था। गौरतलब है कि इस दौरान भी वह देश के विकासार्थ वैकल्पिक आर्थिक कार्यक्रमों से जुड़े रहे। संकटकाल के मध्य उन्होंने मोरारजी देसाई से अन्तर्विरोधों के चलते 23 दिसम्बर 1978 को उत्तर भारत के हजारों–लाखों किसानों, विशेषकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा से बड़ी संख्या में देश की राजधानी में आये किसानों को अपने पक्ष में गोलबंद किया। उत्तर भारत के धोतीधारी किसान वर्ग के राष्ट्रीय राजधानी में बलात प्रवेश का सामना उस पूर्वाग्रहित नौकरशाही और बुद्धिजीवियों से हुआ जो ग्राम और ग्राम्य जीवन की कल्पना से भी अछूते थे। ऐसे वर्ग से सामना उनके लिए अप्रिय और अवहेलना का विषय तो था ही, साथ ही तिरस्कार योग्य भी था। दिल्ली में बैठे अनेक योजनाकारों एवं बुद्धिजीवियों के लिए इस प्रकार के कृषक वर्ग की कोई पूर्व पहचान नहीं थी। वह तो उनके लिए एक अवास्तविकता थी। उनके लिए यह वर्ग पिछड़ेपन का, विलुप्त परम्पराओं का और भद्देपन का प्रतिनिधित्व करता था। देश आधुनिक हो रहा था और ऐसे में इस तरह के लोगों को अनदेखा करना ही उनके लिए बेहतर था। ऐसी वास्तविकता को सामने लाने के कार्य को भले ही लोग अवसरवादिता कहें परन्तु चरण सिंह ने इससे न केवल अपने विरोधियों का सामना देशहित की वैकल्पिक नीतियों के प्रतिपादन के बल पर किया वरन उन्हें विवश कर दिया कि वह ऐसे लोगों की राजधानी में उपस्थिति की वास्तविकता से रूबरू हों, जिनके हितों के नाम पर वे सभी आज तक बोलते आने का दावा करते रहे थे।

1980 के चुनाव में चरण सिंह की 'लोकदल' पार्टी सबसे बड़ी गैर–कांग्रेसी पार्टी बनकर उभरी और वे संसद में प्रतिपक्ष के नेता बने। 1984 के चुनाव में राजीव गांधी की अभूतपूर्व विजय से उन्हें निजी रूप से धक्का लगा, क्योंकि संसद में लोकदल का प्रतिनिधित्व मात्र दो सीटों तक रह गया। फिर भी मृत्युपर्यन्त उत्तर प्रदेश में उनकी पार्टी दूसरे स्थान पर और उत्तरी भारत के मैदानी इलाकों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण गैर–कांग्रेसी दल के रूप में स्थापित रही।

1987 में चरण सिंह की मृत्यु के पश्चात भी उनका प्रभाव कायम रहा। क्योंकि उनके राजनैतिक आधार पर नियंत्रण पाने के लिए उनके राजनैतिक उत्तराधिकारी आपस में संघर्षरत रहे। इनमें उनके पुत्र अजित सिंह, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव एवं पूर्व प्रधानमंत्री वी0पी0 सिंह शामिल हैं।

अजित सिंह का दावा स्वाभाविक उत्तराधिकार के तहत था, तो उत्तर प्रदेश में अजित सिंह के प्रतिद्वंद्वी के रूप में मुलायम सिंह यादव ने बतौर चरण सिंह के सच्चे राजनैतिक वारिस का दावा पेश किया, जिसके प्रमाण मे उन्होंने दलील दी कि चरण सिंह उन्हें पुत्रवत् मानते थे।[6] पर वी0पी0 सिंह ने अगस्त 1990 में मंडल कमीशन की सिफारिशों को लागू करते हुए केन्द्र सरकार के अन्तर्गत लोक सेवा क्षेत्र में पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण स्वीकृत करते हुए पिछड़ी जातियों पर अपने नेतृत्व में जनता पार्टी का नियंत्रण तय कर दिया और इस प्रकार चरण सिंह के राजनैतिक आधार पर सबसे मजबूत दावा पेश कर दिया। यह चरण सिंह के प्रभाव का ही कमाल था कि स्थापित स्तर पर भी, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में चुनाव लड़ रहे उम्मीदवार, अपने चुनाव अभियानों में चरण सिंह से अपने अतीत के रिश्तों का हवाला जरूर देते थे।[7] पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जाट किसान नेता टिकैत भी चरण सिंह का नाम जपते थे,[8] जबकि उन्होंने किसी राजनैतिक पार्टी से कभी कोई सम्बंध नहीं रखा।

स्पष्ट है कि अपने राजनैतिक जीवन में चरण सिंह ने भारत और भारत के सबसे बड़े राज्य के राजनैतिक इतिहास में दर्ज संकट की अधिकांश स्थितियों में निर्णायक केन्द्रीय भूमिका अदा की है। भारतीय राजनीति में संकट को लाने में सक्षम होने के साथ ही चरण सिंह की राजनीति में हिस्सेदारी और संकट की स्थितियों में विशेष अभिरुचि के और भी कई कारण थे। अपने लम्बे राजनैतिक सफर में, उन्होंने पार्टी को आधुनिक बनाने, उच्च संसदीय व्यवहार की परम्पराओं का निर्वाह, आर्थिक विकास की योजनाओं जैसे तथाकथित अनेकों मुहावरों को गढ़ने और भारतीय राजनैतिक जीवन में भ्रष्टाचार की मुहिम आदि में अगुआ रहने की संसदीय परम्परा को सिद्ध करते हुए भारतीय राजनीति[9] पर अपनी मजबूत पकड़ बनाये रखी। चरण सिंह राजनैतिक रूप से महत्वाकांक्षी होने के साथ–साथ एक सुस्पष्ट नीति प्रस्तावक भी थे। उनका सम्पूर्ण राजनैतिक जीवन इस बात का द्योतक है कि नुमाइंदगी वाली राजनीति की ऊबड़–खाबड़ जमीन पर शक्ति और नीति दोनों में सामंजस्य बरकरार रखते हुए उसका सफलतापूर्वक प्रयोग कैसे सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

II

चरण सिंह अपने राजनैतिक सफर में चरण सिंह के राजनीतिक जीवन का दूसरा उल्लेखनीय पहलू यह है कि वह भारतीय राजनीति के सभी स्तरों पर खासी पकड़ तो रखते ही थे, साथ ही मझौले किसान वर्ग के एक समर्थ प्रवक्ता भी थे।[10] अपने सक्रिय राजनैतिक जीवन में उनकी पहचान भारतीय राजनैतिक परम्परा में गांधी और पटेल से प्रेरित होने परन्तु आजादी के बाद के दौर में देश के अन्दर चल रहे सत्ता संघर्ष में नेहरू के धुर विरोधी होने के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्र और कृषक वर्ग के कल्याणकारी मूल्यों के

हित चिंतक के रूप में विशेष रही। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राज्यों में भूमि सुधार कानून लागू करने के परिप्रेक्ष्य में अव्यक्त महत्वपूर्ण जमींदारी उन्मूलन कानून को प्रस्तुत करने का श्रेय चरण सिंह को ही जाता है। उन्होंने अन्य भारतीय राज्यों के समरूप कानूनों का बारीकी से अध्यन करने के बाद जमींदारी उन्मूलन कानून को अंतिम रूप दिया था। वे इस कानून को अपनी प्रमुख उपलब्धि मानते थे। उनके द्वारा लिखित अनेक पुस्तकों में इसी जमींदारी उन्मूलन कानून, भूमि सुधार और उत्तर प्रदेश में आर्थिक रूप से सक्षम किसान वर्ग के उदय जैसे विषयों पर विस्तार से विवेचन किया गया है।

भूमि की चकबंदी, कराधान एवं साधनों के बंटवारे और कृषि उपज की मूल्य नीति के मुद्दों पर चरण सिंह हमेशा बड़े पैमाने के औद्योगिक विकास के विरोध में और कृषि के विकास के पक्ष में– शहरी बनाम ग्रामीण अधिकारों के प्रवक्ता के रूप में संघर्षरत रहे। उन्होंने सदैव राज्य की नौकरशाही के विस्तार और उससे जुड़े भ्रष्टाचार का विरोध किया, क्योंकि उनका दृढ़ मत था कि इससे ग्रामीण संसाधनों का दुरुपयोग होता है और ग्रामीण क्षेत्रों को अल्प लाभ ही मिल पाता है।

1959 में जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने संयुक्त सहकारी खेती के पक्ष में एक प्रस्ताव पारित किया तो चरण सिंह ने इसका घोर विरोध किया। इसके स्थान पर उन्होंने ऐसी नीतियों की वकालत की जिनसे मालिकाना हक वाली खेती की मौजूदा व्यवस्था सुदृढ़ हो और सहकारी खेती की अपेक्षा ग्रामीण लोकतांत्रिक व्यवस्था बहाल रहे। उनके अनुसार सहकारी खेती एक अलोकतांत्रिक व्यवस्था थी। अंततः, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, पहली बार कांग्रेस छोड़ने के बाद चरण सिंह ने आधुनिक भारतीय राजनीति में सर्वाधिक सफल कृषक पार्टी– भारतीय क्रांति दल (बी0के0डी0) का 1969 में गठन किया, जो बाद के वर्षों में अनेक नाम परिवर्तनों के साथ श्रीमती गांधी और आपातकाल के विरोध में मुख्य विपक्षी और फिर जनता पार्टी के प्रमुख घटक के रूप में उभर कर श्रीमती गांधी को सत्ताच्युत करने में सफल हुई और कांग्रेस को हराकर 1977 से 1980 तक केन्द्र में सत्तारूढ़ रही। हालांकि चरण सिंह और उनके राजनैतिक समर्थकों पर अक्सर कुलक वर्ग का हितचिंतक होने का आरोप लगाया जाता रहा है, परन्तु उनके पक्ष के मतदाताओं में बड़े किसानों के साथ–साथ छोटे काश्तकार भी बहुसंख्यक रहे हैं।

III

चरण सिंह की राजनैतिक यात्रा का तीसरा पहलू रहा उनकी तथाकथित 'पिछड़ी जातियों' के हित में सदैव खड़े रहने वाले राजनेता के रूप में पहचान। चरण सिंह ने हमेशा अपने आपको एक जाट के रूप में देखा, जिससे उनका अभिप्राय अन्य बातों के अलावा यही था कि वे उच्च वर्ग से नहीं हैं। यद्यपि उन्होंने पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधित्व के मुद्दे पर जनता में खुद कभी उग्र या आक्रामक रुख नहीं अपनाया पर

कभी–कभी निजी क्षणों में वह इसका जिक्र समाज के सामान्य जीवन में ब्राह्मणों एवं ठाकुरों की स्थिति के मद्देनजर कर जाते थे। उनका विचार था कि पिछड़ी जातियों की स्थिति, विशेष रूप से सेवा के क्षेत्र में और उसमें भी तुलनात्मक रूप से उनके उत्तर प्रदेश राज्य में बेहद सोचनीय थी। उनके दिमाग में यह तथ्य हमेशा रहता था और इस सम्बंध में वह बहुधा आंकड़े भी गिनाते थे कि सरकारी सेवाओं में 45 प्रतिशत से 50 प्रतिशत की सीमा तक ब्राह्मण, बनिया, खत्री जैसा उच्च वर्ग काबिज था, जबकि पिछड़ों की नुमाइंदगी कतिपय विभागों में एक प्रतिशत की हद तक नगण्य थी। वह बाकायदा इंगित करते थे कि आजादी के बाद, आरक्षण की सुविधा के चलते, सरकारी सेवाक्षेत्र में हरिजनों का प्रतिनिधित्व पिछड़ों की अपेक्षा कहीं बेहतर होता जा रहा था। 1977–79 के बीच केन्द्र और उत्तर भारत में जनता पार्टी के शासन के दौरान चरण सिंह ने उत्तर प्रदेश एवं बिहार की जनता पार्टी की सरकारों द्वारा पिछड़ी जातियों के लिए तय आरक्षण नीति का समर्थन किया। हालांकि उन्होंने पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधित्व के लिए आनुपातिक आरक्षण पर बहुत ज्यादा और तार्किक बल नहीं दिया फिर भी उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पिछड़ी जातियों के आरक्षण के लिए 15 प्रतिशत की भर्ती नीति को यथेष्ट माना।[11]

जनता पार्टी के शासनकाल में मण्डल कमीशन की रिपोर्ट तैयारी के दौर में थी। बतौर काम चलाऊ सरकार के प्रधानमंत्रित्व काल के अंतिम दौर में और मंडल कमीशन की रिपोर्ट के बनने से पूर्व 1979 के घोषित आम चुनाव में चुनाव अभियान के बीच चरण सिंह ने अपनी कामचलाऊ सरकार के अन्य सदस्यों खास तौर पर उपप्रधानमंत्री वाई0बी0 चव्हाण के समक्ष केन्द्रीय सेवा क्षेत्र की भर्तियों में पिछड़ी जातियों के लिए 25 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित करने का प्रस्ताव रखा, तथापि इस प्रयास का कोई द्योतक परिणाम सामने नहीं आया।[12]

भारतीय राजनीति में ऊंची जातियों के राजनैतिक एवं आर्थिक प्रभुत्व के विरोध में पिछड़ी जातियों के आन्दोलन का अविरल प्रभाव भारत के अनेक राज्यों पर भी पड़ा। हालांकि उच्च वर्ग, पिछड़ा वर्ग और निम्न वर्ग का सामाजिक ढांचा उत्तर भारत में ज्यादा जटिल एवं विवादास्पद मुद्दा रहा है, न कि तमिलनाडु और दक्षिण में। उत्तर भारत में ऊंची जातियां आज भी राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रबल हैं और संख्या बल में भी वे अति पिछड़ी जातियों से अधिक हैं। इसके अतिरिक्त बहुत सारी पिछड़ी जातियां ऐसी हैं जो बड़े काश्तकार वर्ग से सम्बंधित हैं तथा निम्न जाति के श्रमिक वर्ग को खेती के काम में मजदूरी पर अपने यहां रखती हैं और चूंकि लोक सेवा क्षेत्रों और शिक्षा संस्थानों में नुमाइंदगी में बढ़ोत्तरी की उनकी राजनैतिक मांग, निम्न जाति वर्ग की ओर से की जा रही मांग के समान ही है, अतएव पिछड़ी जातियों और निम्न जाति वर्ग में अक्सर संघर्ष होना आम है।

अपने राजनैतिक जीवनकाल में चरण सिंह को पिछड़ी जातियों से अपना जुड़ाव बनाये रखने के कारण बहुधा ऐसे राजनैतिक संकटों का सामना करना पड़ा, जो इस वर्ग की आकांक्षाओं को समर्थन देने के मुद्दे पर न केवल उनकी आलोचना का आधार बना बल्कि कभी–कभी उच्च जातियों और निम्न जातियों से मिलकर काम करने के आड़े भी आया। चरण सिंह ने दूसरी जातियों, समुदायों को मिलाने के लिए बड़ी होशियारी से अनेक स्तरों पर– जैसे स्थानीय चुनाव क्षेत्रों के साथ–साथ राज्य और राष्ट्रीय राजनीति के स्तर पर भी महती कार्य किया। ऐसे मिले–जुले संगठन बनाने में वह अक्सर सफल रहे फिर भी उन्हें इस दिशा में सबसे ठोस और प्रबल समर्थन इसी पिछड़े वर्ग से प्राप्त हुआ।

चरण सिंह की वैचारिकी के समक्ष राजनैतिक संकट पुनः 1990 में काफी गम्भीरता से तब आया जब उनके राजनैतिक उत्तराधिकारियों ने मंडल कमीशन की सिफारिशों को 10 वर्ष बाद अचानक लागू करते हुए केन्द्र सरकार के सेवा क्षेत्र एवं सार्वजनिक निगमों के सेवा क्षेत्र में पिछड़ों के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने के लिए आरक्षण सुनिश्चित कर पिछड़े वर्ग पर उनकी पकड़ को कमजोर करते हुए उनके राजनैतिक आधार पर अपना दावा पेश कर दिया। यह एक ऐसा कदम था जिसने 1991 में उत्तर भारत की उच्च जातियों के चुनावी दावों को न केवल बूमरेंज कर दिया बल्कि पिछड़ी जातियों को भी– 'आरक्षण प्राप्त जातियों' और 'आरक्षण से बाहर की जातियों, जिनमें जाट भी शामिल थे– में बांट दिया। ऐसे नाजुक हालात में सेवा क्षेत्र में पिछड़ी जातियों के प्रबल प्रतिनिधित्व व उनके राजनैतिक एवं सार्वजनिक प्रभाव के मुद्दे पर चरण सिंह का संदेश बहुत ही हल्के ढंग से जनता में आया कि इस सबके बीच कृषक वर्ग की आर्थिक उन्नति के सन्दर्भ में उनकी आवाज भी दबी रह गयी।[13] यद्यपि बहुत सी ऊंची जातियों के राजनेता और उत्तर प्रदेश की राजनीति के बड़े कुलक, चरण सिंह के पिछड़ी जातियों और छोटे किसानों, चाहे वह किसी भी जाति से हों, के प्रति हितचिंतन को नापसंद करते थे फिर भी जातिगत मुद्दों पर अपने संयमित विचारों एवं सभी जातियों से सम्बंधित किसानों के सामान्य आर्थिक हितों पर जोर देने की सहज प्रवृत्ति के कारण चरण सिंह इन ऊंची जातियों के राजनेताओं के साथ स्थानीय स्तर पर चुनावी तालमेल बैठाकर गठबंधन बनाने में सफल रहे।

IV

चरण सिंह के जीवन का चौथा महति पहलू उनकी लेखकीय यात्रा का है, जिसमें उन्होंने भूमि सुधार, कृषि एवं भारत में आर्थिक विकास सम्बंधी विषयों पर अनेक और अत्यंत मौलिक पुस्तकें लिखीं, जो इन विषयों पर विस्तृत तुलनात्मक अध्यन तो प्रस्तुत करती ही हैं, साथ ही आर्थिक विकास के छात्रों के लिए सैद्धांतिक रूप से अत्यंत उपयोगी कलेवर भी पेश करती हैं। चरण सिंह द्वारा लिखित सर्वाधिक महत्वपूर्ण

पुस्तक *''इंडिया'ज पॉवर्टी एण्ड इट्स सोल्यूशन''*[14] 1959 में अपने मौलिक रूप में *'ज्वाइंट फार्मिंग एक्सरेड'* नाम से प्रकाशित हुई थी। दरअसल इंडियन नेशनल कांग्रेस के 'नागपुर प्रस्ताव', जिसमें भारतीय कृषि की समस्याओं का समाधान भारी उद्यमों की स्थापना से किया जाना प्रमुख लक्ष्य घोषित किया गया था– के प्रत्युत्तर में चरण सिंह द्वारा उक्त पुस्तक लिखी गई थी।[15] यद्यपि यह पुस्तक कोऑपरेटिव फार्मिंग के मुद्दे को नकार कर उस पर दोषारोपण करती है, तथापि यह पुस्तक भारत के लिए आर्थिक विकास के उपयुक्त ढांचे का मॉडल प्रस्तुत करती है, जिसे औद्योगिक विकास के स्थान पर कृषि क्षेत्र की प्रगति पर आधारित किया गया है; और ऐसा उन्होंने कृषक वर्ग के प्रभुत्व व हक–हकूक को संरक्षित करने के लिए किया, क्योंकि उनके मत में ऐसा करना विकासजन्य आर्थिक लक्ष्यों और लोकतंत्र के राजनैतिक लक्ष्यों– दोनों को– प्राप्त करने के लिए सर्वथा उपयुक्त था।

यह पुस्तक ऐसे समय में प्रकाशित हुई थी जब नेहरू–युग उत्कर्ष पर था और उस समय सारा जोर तीव्र औद्योगीकरण द्वारा आर्थिक विकास करने पर था, जिसमें कृषि को औद्योगीकरण के मूल साधन के रूप में मान्यता दी गई, ताकि शहरी क्षेत्रों के लिए भोजन एवं योजनागत परियोजनाओं के लिए राजस्व जुटाया जा सके। इस परिदृश्य में चरण सिंह को भारत के आधुनिकीकरण के आड़े आने वाले एक अस्पष्ट विरोधी के रूप में देखा गया। फिर भी चरण सिंह द्वारा जो तर्क प्रस्तुत किये गये, वह बाद के समय में, तीव्र औद्योगीकरण की नीति पर हुई आलोचनाओं का जैसे पूर्वानुमान सिद्ध हुए और निश्चित रूप से वह कृषि के विकास पर प्राथमिकता से ध्यान दिये जाने योग्य और साथ ही परिस्थितिकी और मानवीय पर्यावरण विनाश की वैश्विक चिंताओं को भी सम्बोधित थे।

भारत के किसान और कृषि के हित में चरण सिंह के विचार न केवल आर्थिक और पारिस्थितिकी–आधारित थे वरन वे राजनैतिक एवं वैचारिक भूमि पर सुदृढ़ थे। उनका मत था कि कृषि आधारित समाज में जनतंत्र छोटी जोतों के अस्तित्व पर अवलम्बित है। बड़ी जोतें अंततः जनतंत्र विरोधी होती हैं, चाहे उनकी प्रकृति पूंजी आधारित हो अथवा सामूहिक– दोनों अवस्थाओं में बड़े फार्म निश्चित रूप से शक्ति के केन्द्रीकरण को जन्म देने के साथ–साथ कृषि उद्यम को कुछ ही हाथों में सीमित कर देते हैं और किसान के पास रह जाती है रहने को तंग बैरकें और खुद वे बन जाते हैं विशालकाय कृषि कारखानों के मजदूर वाले घटक।[16]

चरण सिंह की ''ज्वाइंट फार्मिंग'' पुस्तक कृषि क्षेत्र को वरीयता देने और उसमे पूंजी निवेश की दलीलें ऐसे इच्छित परिणामों को पाने के लिए देती है, जिन्हें 10 वर्ष बाद 'हरित क्रांति' उपाधि से नावाजा गया। यहां तक कि गेहूँ, चावल की नई–नई किस्मों के विकास से पहले भी उनका मत था कि पर्याप्त पूंजी

निवेश द्वारा भारत के खाद्यान्न उत्पादन को दुगुना–तिगुना करना होगा। फिर भी अपने प्रस्तावों के मद्देनजर चरण सिंह भारत सरकार, अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थानों और बाह्य एजेंसियों से मिलने वाली सहायता के बल पर उन्नति करने के हिमायतियों से अलग इसलिए नजर आते हैं क्योंकि उनका नजरिया हमेशा से किसानों के आत्मनिर्भर बनने के साथ–साथ कृषक समाज के पूर्णतः स्वावलम्बी होने की सम्भाव्यता के एवं उनके राजनैतिक, आर्थिक यहां तक कि कृषक और कृषि में नैतिक मूल्यों के हितों को साधने का रहा। इसे यों कहा जा सकता है कि चरण सिंह इस बात के हामी थे कि भारतीय कृषि क्षेत्र में तकनीक और पूंजीगत निवेश होना चाहिए, ताकि विशिष्ट सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था, राजनैतिक प्रणाली और जीवन शैली को बरकरार रखा जा सके।

यद्यपि चरण सिंह के आर्थिक विचार जटिल और पांडित्यपूर्ण थे, पर उन्होंने ये विचार कभी भी अर्थशास्त्रियों के ज्ञानवर्धन के लिए नहीं प्रस्तुत किये। वास्तविकता यही है कि उन्होंने अनेक अवसरों पर अपने नेतृत्व वाली राजनैतिक पार्टियों के घोषणा–पत्रों के प्रमुख कलेवरों में इन्हें एकत्रित रूप में प्रस्तुत किया है। ऐसे में यह घोषणा–पत्र भातरवर्ष में अब तक जारी सभी घोषणा–पत्रों में अप्रतिम हैं।[17]

सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि चरण सिंह का राजनैतिक जीवन और उनके आर्थिक विचार भारत और बाकी दुनिया के कृषक समाज के लिए कहीं ज्यादा बड़े मुद्दों को विस्तार से समझने के हेतु जैसे एक प्रवेश द्वार हैं। उनका राजनैतिक जीवनक्रम इस बात को पुख्ता ढंग से उठाता है कि 20वीं शताब्दी में एक विकासोन्मुख राष्ट्र में एक वास्तविक कृषि आन्दोलन को व्यवहार योग्य और सुदृढ़ राजनैतिक बल बनाया जा सकता है या नहीं। उनके आर्थिक विचार और राजनैतिक कार्यक्रम प्रश्न उठाते हैं कि क्या समकालीन कृषक–समाज के आर्थिक विकास के लक्ष्य औद्योगीकरण के भारी दबाव के चलते प्राप्त किये जा सकते हैं या नहीं। कुल मिलाकर कृषक को भूस्वामी बनाने की व्यवस्था की संरक्षा और स्थायित्व के लिए उन्होंने जो विशिष्ट प्रस्ताव प्रस्तुत किये उसने एक बार फिर आधुनिक समय के एक बड़े सामाजिक सवाल को सामने ला खड़ा किया कि छोटी–छोटी काश्तों वाले कृषक–समाज की व्यवस्था क्या कृषि उपज के भारी व्यवसायीकरण अथवा सामूहिक प्रकार के बड़े काश्तकारों के कारण उत्पन्न स्पर्धा के दबाव को झेलने में समर्थ हो सकती है।

V

1987 में उनकी मृत्यु के बाद चरण सिंह को समझने वालों के बीच उनके जीवन को देवतुल्य बनाया जाना आम हो गया है। यह कहा जाने लगा है कि चरण सिंह उन महान और पृथक श्रेणी के नेताओं में आते हैं, जिन्हें भारतीय मिट्टी की सुस्पष्ट पहचान थी, जुड़ाव था, जबकि आज का समय अब

बद से बदतर कहा जा सकता है। चरण सिंह के बारे में मेरा अपना मत यह है कि वे एक अपूर्ण किस्म के राजनेता थे, जिनकी उपलब्धियॉं तो बहुत थीं परन्तु जितनी वे आशा करते थे उससे कहीं कम। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने शक्ति का इस्तेमाल निष्ठुरता से करने और अपने अधिकांश सहयोगियों और प्रतिद्वंद्वियों का अनादर करने से कभी परहेज नहीं किया। लेकिन इन दोषों के बावजूद वे अपने राजनैतिक विरोधियों और उन शहरी बुद्धिजीवियों– जो उनके बौद्धिक ज्ञान, निजी ईमानदारी और उनके सम्बद्ध आर्थिक और सामाजिक विचारों के कारण उनके प्रति घृणा की हद तक ईर्ष्यालु थे, से सर्वथा अलग नजर आते हैं। हालांकि चरण सिंह के राजनीतिक जीवन के दौरान कमियां समय–समय पर सामने आती रही, फिर भी वे 1970 के मध्य से भारतीय राजनीति में हो रहे राजनीतिक परिवर्तन के दौरान अधिक प्रकट हुईं। यह समय राजनीति का कोई स्वर्ण काल तो नहीं था फिर भी यह एक ऐसा समय था जिसमें नैतिकता और भष्टाचार के संदर्भ में पर्याप्त संवाद कायम था, प्रतिद्वंद्वियों पर प्रहार के राजनैतिक तरीकों की हदें तय थीं, जनमत एकत्रित करने पर जोर था और साथ ही धार्मिक भावनाओं का शोषण एवं समान अन्य बातें भी थीं।

नैतिकता एवं भ्रष्टाचार सम्बंधी सम्यक विचार आजादी के बाद के दो दशकों में उत्तर प्रदेश की जनपदीय रजनीति पर चरण सिंह द्वारा लिखित पत्रों में मिलते हैं। ये पत्र चरण सिंह व उनके जनपदीय समर्थकों के विरोधियों और प्रतिद्वंद्वी स्थानीय राजनेताओं के बीच एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप के तथ्यों से लवरेज हैं। इनमें रिश्वत के विरुद्ध शिकायतें, जातिवाद, नियुक्तियों में पक्षपात, चुनावी मशीनरी का दुरुपयोग और राजनेताओं–अपराधियों के गठजोड़ के तत्व प्रमुख हैं।

वस्तुतः ये पत्र स्थानीय स्तर पर राजनैतिक प्रतिद्वंद्विता तथा सक्रिय राजनैतिक लामबंदी के विषयों पर एक अन्तर्दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। मैंने 1960 में अपने पूर्व लेखन–कार्यों को और कई दूसरे राजनीति विज्ञानियों एवं मानवशास्त्रियों ने भी अपनी–अपनी पुस्तकों में उक्त तथ्यों का परीक्षण किया हुआ है।[18] इन पत्रों से उस समय के दोषारोपण, प्रतिदोषारोण और प्रत्युत्तरों सम्बंधी राजनैतिक व्यवहार का भी भलीभांति संज्ञान होता है, जिनमें भाग लेने वालों के मूल्यों एवं नैतिक स्तरों का भी पता चलता है। जाहिर है कि इसमें चरण सिंह का परीक्षण ही अधिक रहा है, क्योंकि वे अपनी निजी ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा का मूल्यांकन प्रस्तुत करने के साथ ही जो उनके बनाये हुए कड़े मानकों पर खरे नहीं उतरते थे, उनका अवमूल्यन भी कर जाते थे। हालांकि उस समय आरोप और अभियोग जितने भी गम्भीर प्रकृति के रहे हों पर वे तथ्यात्मक जरूर होते थे और आज की तरह के लगाये जाने वाले दोषारोपणों से गुण रूप में सर्वथा भिन्न भी। रिश्वत, जातिवाद, पक्षपात, चुनावी मशीनरी के दुरुपयोग एवं कुछ राजनेताओं–अपराधियों के गठजोड़ों का स्थान अब बड़े पैमाने के संस्थागत राजनैतिक एवं नौकरशाही के भ्रष्टाचार ने, अभियोगों व

चुनाव पूर्व या बाद होने वाली वास्तविक भारी हिंसा ने और गैर–कानूनी गतिविधियों जैसे हत्याओं के अलावा राजनैतिक उद्देश्य से जानबूझ कर साम्प्रदायिक दंगों को भड़काना आदि में संलिप्त पुलिस, राजनेताओं और अपराधियों के गठजोड़ ने ले ली है।

उस समय भारतीय राज्य और आर्थिक स्थिति पर संवाद सोद्देश्य कायम था कि कैसे भारत के लिए आर्थिक विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ–साथ गरीबों की न्यूनतम मांगों को भी पूरा किया जा सके। चरण सिंह ने स्वयं भी गुटबंदी और नीतिगत बहसों के बीच अपने पत्र–व्यवहार, टिप्पणियों एवं स्मृति–पत्रों के माध्यम से इस प्रकार के संवादों को स्थापित किया है। उनकी स्थिति हमेशा सही रहने वाले एक सुधारक की भले ही न रही हो परन्तु उन्होंने जो संवाद कायम करने की पहल की थी, वह उनके समय और उनके बाद के समय पर एक सटीक टिप्पणी प्रस्तुत करती है।

टिपणी

(1983 में मैंने चरण सिंह से उनकी जीवनी लिखने की इच्छा व्यक्त की थी। इस संदर्भ में मुझे उनके उन सभी कागजात एवं फाइलों के अवलोकन और उनकी प्रतियां तैयार करवाने की इजाजात दी गई थी, जो इस कार्य में मेरे लिए उपयोगी थीं। चरण सिंह की उसी सामग्री में से कुछेक का उपयोग इस लेख में संदर्भ के रूप में किया गया है।)

1. इस मुद्दे पर विस्तृत जानकारी के लिए देखें : its relationship to factional conflicts in the Congress and the role of opposition parties at the time, see Paul R. Brass. Uttar Pradesh in Myron Weiner (ed). *State Politics in India* NJ: Princeton University Press, Princeton, 1968, PP 100-109 and Paul R. Brass, 'Division in the Congress and the Rise of Agrarian Interests and Issues in Uttar Pradesh Politics, 1952-1977' in Paul R. Brass, Caste, Faction and Party in Indian Politics, Vol. I : Faction and Party, Chanakya, Delhi, 1983, pp 309-312.

2. श्री शिब्बन लाल सक्सेना को चरण सिंह का पत्र, दिनांक मार्च 26, 1958 ।

3. चरण सिंह से 25 जुलाई 1973 को उनके आवास, 34, माल एवेन्यू, लखनऊ पर साक्षात्कार
4. 1967 से 1971 के वर्षों के बीच गैर–कांग्रेस नीत गठबंधन एवं कांग्रेस सरकारों का उत्तर प्रदेश में बारी–बारी सत्ता में आना। पहली गैर कांग्रेस गठबंधन सरकार चरण सिंह के नेतृत्व में 3 अप्रैल 1967 से 17 फरवरी 1968 तक रही। इसके बाद कांग्रेस की सरकार सी0बी0 गुप्ता के नेतृत्व में आई, जो 26 फरवरी 1969 से 10 फरवरी 1970 तक चली। चरण सिंह ने दोबारा गठबंधन का नेतृत्व किया, इस बार कांग्रेस के साथ, 17 फरवरी 1970 से 2 अक्टूबर 1970 तक। इस दौरान अंतिम गैर कांग्रेसी गठबंधन टी0एन0 सिंह के नेतृत्व में बना, जिसकी सरकार 18 अक्टूबर 1970 से 3 मार्च 1971 के अंत तक चली। एकल पार्टी के रूप में कमलापति त्रिपाठी के मुख्यमंत्रित्व में 4 अप्रैल 1971 को कांग्रेस सत्ता में लाटी। अधिक जानकारी के लिए देखें : Brass, Division in the Congress and the Rise of Agrarian Interests and issues in Uttar Pradesh Politics, 1952-1977 op cit, pp 318.

5. चरण सिंह से 25 जुलाई 1973 को उनके आवास, 34, माल एवेन्यू, लखनऊ पर साक्षात्कार। इसे भी देखें : Chaudhary Charan Singh, *The Story of New Congress-BKD Relations: How New Congress Broke the UP Coalition,* Lucknow, BKD, 1970

6. 24 जून 1991 को लखनऊ में लिया गया साक्षात्कार।

7. देखें 1991 के चुनाव के बुलंदशहर लोकसभा क्षेत्र पर टाइम्स ऑफ इंडिया, मई 17 और 18, 1991 की रिपोर्ट।

8. इंडिया टुडे, 15 मार्च 1988

9. W.H. Morris-Jones, *Government and Politics if India*. Hutchinson, London 1971.

10. इस विषय में अवलोकन करें : Terence J. Byres, 'Charan Singh, 1902-87 : An Assessent', Journal of Peasant Studies, Vol. XV, No. 2 (January 1988), pp 139-89. बायर्स मध्यम किसानों के प्रति चरण सिंह के लगाव और उनसे मिले समर्थन को स्वीकारते हैं, पर पृष्ठ 147 पर तर्क देते हैं कि उनकी राजनीति से 'धनी किसान प्रमुखता से लाभार्थी रहे'

11. 24 मार्च 1978 को दिल्ली से बाहर सूरजकुंड, निरीक्षण गृह में चरण सिंह से साक्षात्कार।

12. 3 दिसम्बर 1979 को उपप्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री वाई0बी0 चव्हाण को चरण सिंह का पत्र। यह प्रकरण अधिक ध्यान दिये जाने की मांग करता है, किन्तु यह पत्र प्रस्ताव पर विचार के लिए बुलाई गई कैबिनेट मीटिंग के परिणामों को नहीं दर्शाता। एक पूर्व निर्णय इस तरह की आरक्षण योजना को लागू करने के लिए टालना पड़ा था, किन्तु चुनाव अभियान के दबावों ने इसे बढ़ावा देने के लिए चरण सिंह को एक नाटकीय तौर–तरीका अपनाने को बाध्य किया होगा। हालांकि अनिश्चित राजनीतिक नतीजों के लिए इस तरह के नाटकीय तरीके अपनाना चरण सिंह के राजनीतक जीवन की लाक्षणिक विशेषता नहीं थी, जिसमें बहुधा उन्होंने प्रचुर सतर्कता दिखाई।

13. चरण सिह और वी0पी0 सिंह दोनों का एक पूर्व सहयोगी पूर्ववर्ती और परवर्ती की नीतियों की तुलना करते हुए टिप्पणी करता है– ''वी0पी0 सिंह ने किसानों को 'मंडल कृषक वर्ग' और 'गैर मंडल कृषक वर्ग' में बांट दिया। इसके चलते उन्होंने हर चीज का घालमेल करते हुए ऊपरी तौर पर एक बेहद सशक्त संयोजन तैयार किया।'' इसके विपरीत वह कहता है, ''चरण सिंह ने मंडल के बारे में कभी नहीं कहा और वह हर आदमी को साथ लेकर चले। जब वह बात करते थे.......विकास के केन्द्र के तौर पर, ...वह अधिकाधिक गांधीवादी थे......और इसी बीच, जिसके चलते न केवल जाट बल्कि ब्राह्मण, ठाकुर भी उनको– संख्या में भले ही कम वोट कर रहे थे। वस्तुतः उन्होंने (चरण सिंह ने) एक कृषक आधार बनाया। वी0पी0 सिंह ने उसके बर्बाद कर दिया।'' नई दिल्ली में 11 जून 1991 को साक्षात्कार।

14. Charan Singh, *India's Poverty and Its Solution*, Asia Publishing House, London 1964.

15. इसमें कुछ सामग्री और बाद के तीन पैराग्राफ 'Division in Congress and the Rise of Agrarian Interests and Issues in Uttar Pradesh Politics, 1952 to 1977, Op cit, pp 30-34; Brass से लिये गये हैं।

16. Charan Singh, *India's Poverty,* op cit, P 103.

17. देखें, Bharatiya Kranti Dal, *Aims and Principles,* signed by Charan Singh, Lucknow, 1971, and Lok Dal, *Electon Manifesto,* 1979.

18. *Vide esp. Paul R. Brass, Factional Politics in the Indian State : The Congress Party in Uttar Pradesh,* University of California Press, Berkeley, 1965; Myron Weiner, *Party Building in a New Nation : The Indian National Congress,* University of Chicago Press, Chicago, 1967; Richard Sission, *The Congress Party in Rajasthan : Political Integration and Institution-Building in an Indian State,* University of California Press Berkeley, 1972; Donald B. Rosenthal, *The Expansive Elite : District Politics and State Policy-Making in India,* University of California Press Berkeley.